P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में भाजपा के बदलते प्रतिमान : राजस्थान के विशेष सन्दर्भ में

अन्नपूर्णा रूंथला
शोधार्थी
राजनीति विज्ञान विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में राष्ट्रीय राजनीतिक दल के रूप में भाजपा भारतीय राजनैतिक दृश्य पटल पर बहुत पुराना दल नहीं है,तथापि भाजपा ने अपनी नीतियों,विचारधारा एवं नेतृत्व के आधार पर भारतीय राजनीति में अपना स्थान सुदृढ़ कर लिया है। वर्ष 1980 में अपनी स्थापना से लेकर एक राष्ट्रीय दल के रूप में भाजपा ने अपने प्रभुत्व का विस्तार करते हुए समकालीन 16 वीं लोकसभा चुनावों में स्पष्ट एवं पूर्ण बहुमत प्राप्त कर राजनीतिक गतिशीलता तथा भारत में लोकतान्त्रिक परिपक्वता को सुदृढ़ता प्रदान की है।

मुख्य शब्द : भाजपा का बढ़ता वर्चस्व।

प्रस्तावना

राजनीतिक दल प्रजातांत्रिक व्यवस्थाओं के आधार स्तम्भ होते है। भारतीय राजनीतिक व्यवस्था भी दलीय व्यवस्था पर आधारित है। राजनीति में प्रचलित अनेक शासन प्रणालियों में प्रजातांत्रिक शासन प्रणालियाँ अधिक स्वीकार्य एवम् व्यवहारिक प्रतीत होती है। मुख्यतः 21वीं सदी में विश्व के अनेक देशों में प्रजातंत्र में प्रति हुए आंदोलन इसकी महत्ता एवम् प्रासंगिकता को इंगित करते हैं। सैद्धान्तिक एवम् व्यवहारिक दृष्टिकोण से लोकतंत्र शासन प्रणाली का ही रूप न होकर एक जीवन प्रणाली भी है। समानता, स्वतंत्रता, न्याय जैसे मूल्यों से ओतप्रोत प्रजातंत्र मनुष्य के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का एक साधन है। लोकतंत्र शासन प्रणाली में व्यक्ति की भागीदारी को सुनिश्चित करता है। लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में राजनीतिक दलों के माध्यम से व्यक्ति शासन में भागीदारी करता है। राजनीतिक दल जनमानस के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा निर्णय के रूप में नीतियों एवम् कानूनों को जन समुदाय तक पहुँचाता है। स्पष्टतः राजनीतिक दल किसी भी राजनीतिक व्यवस्था के आधार स्तम्भ होते है। किसी भी व्यवस्था में राजनीतिक दलों की प्रकृति एवम् स्वरूप वहाँ की सामाजिक व्यवस्था एवम् राजनीतिक ढांचे से प्रेरित होती है।

अध्ययन का उद्देश्य

भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के परम्परागत एवं परिवर्तित स्वरूप की व्याख्या करना ताकि भारतीय रानजीतिक गतिशीलता को पुर्नपरिभाषित किया जा सके।

साहित्यावलोकन

जोया हसन द्वारा लिखित पुस्तक ''पार्टीज एण्ड पार्टी पॉलटिक्स इन इण्डिया' ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा 2002 में प्रकाशित है। इस पुस्तक में लेखिका ने राजनीति और दलीय व्यवस्था पर लेखों का एक संग्रह प्रस्तुत किया है। भारत में दलीय राजनीतिक किस प्रकार क्षेत्रीयता, धार्मिकता तथा जातीयता से प्रभावित है उसकी व्याख्या की गई है।

क्रिस्टोफे जेफरलोट द्वारा लिखित ''द संघ परिवार ए रीडर'' ओयूपी इंडिया'' द्वारा प्रकाशित है। इसमें लेखक ने संघ की हिन्दुत्व की नीतियों की समीक्षा की है तथा भाजपा की कार्य योजनाओं पर इसका प्रभाव का वर्णन प्रस्तुत किया है।

रजनी कोठारी ने ''भारत में राजनीति कल और आज'' (2005) में भारतीय राजनीति के विकास का चित्र प्रस्तुत किया है। हजारों साल पुराना हमारा पारम्परिक समाज लोकतांत्रिक राजनीति के हाथों बदल रहा है। भारतीय राजनीतिक घटनाक्रम, लोक लुभानवादी राजनीति के उभार साम्प्रदायिक राजनीतिक का संक्षिप्त विश्लेषण किया है।

लोकतंत्र के पहियों के रूप में राजनीतिक दल अनिवार्य हैं। लोकतंत्र चाहे उसका कोई भी स्वरूप क्यों न हो, राजनीतिक दलों की अनुपस्थिति में अकल्पनीय है, इसलिये उन्हें लोकतंत्र का प्राण कहा गया है। यदि राजनीतिक दलों को शासन का चतुर्थ अंग कहा जावे तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। आज के प्रतिनिधिमूलक सरकार का सार यही है कि सरकार और संसद दोनों पर दल का प्रतिबन्ध रहता है। विधानमण्डल और कार्यपालिका, सरकार और संसद केवल सांवैधानिक आवरण है। यथार्थ शक्ति का प्रयोग राजनीतिक दल ही करते हैं। राजनीतिक दल वर्तमान समय में लोकतंत्र के चालक माने जाते है। सर्वाधिकारवादी शासन प्रणालियों में भी इनका अस्तित्व पाया जाता है। मोटे तौर पर राजनीतिक दल प्रतिनिध्यात्मक लोकतंत्र के आधार माने जाते है। राजनीतिक दल कुछ व्यक्तियों का समूह होते हैं। इनके अपने संगठन होते है। यह विभिन्न हितों का पोषण व प्रतिनिधित्व करते है। राजनीतिक दल निर्वाचन पद्धति के माध्यम से संसदीय लोकतंत्र में सत्ता प्राप्त करते हैं। संसदीय शासन में जनमत विभिन्न राजनीतिक दलों के माध्यम से ही व्यक्त होता है। भारत विश्व का विशालतम् लोकतांत्रिक देश है। संसदीय प्रणाली की अनिवार्य विवक्षा के रूप में भारत में राजनैतिक दल की भूमिका का निर्णायक महत्व रहा है।

स्वातन्त्रोत्तर भारत में लंबे समय तक केन्द्र एवं राज्य दोनों स्तरों पर कांग्रेस दल का प्रभुत्व रहा। वर्ष 1977 में पहली बार केन्द्र में जनता दल ने गैर–कांग्रेसी सरकार बनाई। शीघ्र ही जनता पार्टी दल में बिखराव के पश्चात् वर्ष 1980 में भारतीय जनता दल का गठन हुआ। शनैः शनैः भारतीय जनता दल में न केवल विपक्ष के शून्य स्थान को भरा अपितु भारतीय मतदाताओं के समक्ष एक अन्य विकल्प भी प्रस्तुत किया। गठबंधन सरकारों के दौर में सर्वप्रथम भारतीय जनता दल ने एक स्थिर कार्यकाल पूर्ण किया। भाजपा ने आन्तरिक विघटन एवं राजनीतिक अस्थिरता के चलते भारतीय जनता दल विगत दस वर्षों से केन्द्र की सत्ता से दूर रही।[1] लेकिन 2013 में राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों में भाजपा को भारी जनादेश प्राप्त हुआ एवं कई राज्यों में भाजपा ने अपनी सरकार बनाई। राजस्थान में भाजपा ने पूर्ण बहुमत प्राप्त कर सरकार का गठन किया। प्रस्तुत शोध विषय का सम्बन्ध भाजपा के बढ़ते वर्चस्व से है जिसका मुख्य केन्द्र बिन्दु राजस्थान प्रदेश है। इसका परिणाम यह रहा कि विधानसभा चुनावों के प्राप्त संकेत हो या मोदी फैक्टर या विकास एवं सुशासन की जनता की इच्छा, 2014 के लोकसभा चुनावों में भाजपा ने तीन दशकों पश्चात् केन्द्र में पूर्ण बहुमत की सरकार बना इतिहास रच दिया। विशेषतया राजस्थान मैं भाजपा के वर्चस्व में बढ़ोतरी हुई है।

इससे भी आगे अक्टूबर 2014 में राज्य में सम्पन्न नगरपालिका एवं नगर निगम के चुनावों में भाजपा ने विधानसभा एवं संसदीय चुनावों की विजय को कायम रख अपने प्रभाव विस्तार की सुस्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत की है। उपर्युक्त चुनावों में प्राप्त जनादेश एवं बहुमत तथा अन्य राज्यों में होने जा रहे विधानसभा चुनावों में भाजपा की लोकप्रियता इसके प्रभुत्व की सूचक है। इसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि दिसम्बर 2014 में भारत के अनेक क्षेत्रीय दलों ने भाजपा के विजयी रथ को रोकने एवं इसके वर्चस्व को सीमित करने हेतु एक सम्मिलित नए मौर्चे समाजवादी जनता दल का ऐलान कर दिया। भारतीय राजनीति में भाजपा की बदलती हुई भूमिका अद्भूत, आश्चर्यजनक एवं चर्चा का विषय बना हुआ है। यह केवल भारतीय राजनीति ही नहीं अपितु राजनीति के जानकारों हेतु भी शोध एवं चर्चा का विषय बन रहा है। इसी अध्ययन के सन्दर्भ में भारतीय जनता दल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उसकी विचारधारात्मक भूमि एवं एजेंडा पर विचार करना प्रासंगिक होगा।[2]

भारतीय जनता दल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

स्वतन्त्रोत्तर भारत में कांग्रेस की धर्मनिरपेक्ष राजनीति के जवाब में वर्ष 1951 में श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा भारतीय जनसंघ की स्थापना की गई। भारतीय जनसंघ की स्थापना में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विस्तृत भूमिका रही है। निश्चित ही जनसंघ की विचारधारा पर आर.एस.एस. की हिन्दुवादी सांस्कृतिक तत्वों का व्यापक प्रभाव रहा है। श्याम प्रसाद मुखर्जी की मृत्यु के पश्चात् अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी अग्रिम पीढ़ी के नेता बने। 1967 में सम्पन्न विधानसभा चुनावों में दल ने स्वतन्त्र पार्टी और समाजवादी पार्टी सहित कई अन्य दलों के साथ गठबंधन में पहली बार प्रवेश किया।[3]

वर्ष 1973 में तत्कालीन इंदिरा गांधी सरकार द्वारा घोषित आपातकाल जनसंख्या नियन्त्रण के कार्यक्रमों की विफलता के फलस्वरूप 1977 में हुए चुनावों में जनसंघ, समाजवादी दल, कांग्रेस (ओ) एवं भारतीय लोकदल ने एक होकर कांग्रेस विरोधी मोर्चा बनाया। जिसे जनता दल का नाम दिया गया। तत्पश्चात् 1977 के आम चुनावों में कांग्रेस की पराजय हुई तथा जनता दल ने केन्द्र में कांग्रेस के स्वाधिकार को ध्वस्त कर प्रथम गैर–कांग्रेसी सरकार गठित की। मोरारजी देसाई भारत के प्रथम गैर–कांग्रेसी प्रधानमंत्री बने। लेकिन नई जनता दल के विभिन्न मुद्दों में सत्ता के बंटवारे को लेकर असहमति विद्यमान थी, परिणामस्वरूप ढ़ाई वर्ष पश्चात तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई के इस्तीफे के पश्चात् जनता दल का विघटन हो गया।[4]

जनता दल के विखण्डन के परिणामस्वरूप वर्ष 1980 में अटल बिहारी वाजपेयी एवं लालकृष्ण आडवाणी ने भारतीय जनता दल की नींव रखी। यद्यपि भाजपा तकनीकी रूप से जनसंघ से पृथक था किन्तु इसकी विचारधारा पर जनसंघ का स्पष्ट प्रभाव था। भाजपा ने जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रान्ति तथा गांधीवादी अर्थनीति को अपना आदर्श बनाया। वर्ष 1980 में भाजपा ने अपने नीति वक्तव्य में राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय समन्वय, लोकतन्त्र, प्रभावकारी धर्मनिरपेक्षता, गांधीवादी समाजवाद जैसे सिद्धान्तों पर आधारित रणनीति प्रस्तुत की। सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक दृष्टि से दल को छोटे व्यापारियों शहरी मध्यम वर्ग, युवकों तथा बुद्धिजीवियों का व्यापक जनसमर्थन प्राप्त है।

भाजपा ने अपनी प्रारम्भिक अवस्था में राम मन्दिर को मुद्दा बनाया, परिणामस्वरूप 1980 में हुए 9 राज्यों के विधानसभा चुनावों में दल को अपेक्षित सफलता

नहीं मिली। राजस्थान में तो 200 में से 32 सीटें ही जीत पाई। मई 1982 में हुए लोकसभा उपचुनावों में दल ने आंषिक सफलता प्राप्त की। जनता दल शनैः शनैः अपने जनादेश एवं प्रभाव का विस्तार कर रही थी किन्तु उसे अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं हो पा रही थी। लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा के अविर्भाव ने मतदाताओं को एक विकल्प अवश्य उपलब्ध करा दिया था। वर्ष 1983 में भाजपा ने भारतीय लोकदल के साथ मिलकर राष्ट्रीय लोकतान्त्रिक मोर्चा नामक गठबंधन तैयार किया। किन्तु 1984 में यह गठबंधन टूट गया। लालकृष्ण आडवाणी ने 1984 में राम जन्म आन्दोलन को राजनीतिक आवाज दी। इसी श्रृंखला में 1989 में सम्पन्न लोकसभा चुनावों में अपेक्षित सफलता प्राप्त कर अपने जनादेश की सुदृढ़ता का आधार तैयार किया। तत्कालीन राजनीतिक स्थिति के तहत भाजपा के बिना सरकार बनाना सम्भव नहीं था। तत्पश्चात् वी.पी सिंह ने भाजपा के समर्थन से राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार बनाई।[5]

भाजपा के विस्तृत होते दायरे एवं बढ़ती लोकप्रियता के परिणामस्वरूप 1990 में हुए विधानसभा चुनावों में भाजपा ने राजस्थान, मध्यप्रदशष व हिमाचल प्रदेश में अपनी स्वतन्त्र सरकारें बनाई। 1991 में हुए लोकसभा चुनावों में भाजपा ने कुल 20.1 प्रतिशत मत प्राप्त कर कुल 120 सीटें प्राप्त की। ग्यारहवीं लोकसभा चुनावों (1996) में भाजपा ने सर्वाधिक 161 सीटें जीतकर सबसे बड़ा दल बना। स्पष्ट बहुमत के अभाव में राष्ट्रपति ने भाजपा नेता अटल बिहारी वाजपेयी को सरकार बनाने के लिए आमन्त्रित किया। लेकिन लोकसभा में बहुमत सिद्ध न कर पाने के कारण वाजपेयी सरकार केवल 13 दिन ही चल पाई। तथापि इन चुनावों में भाजपा एक बड़ी शक्ति के रूप में उभरी तथा भारत में एक सशक्त विपक्षी दल का विकल्प उपलब्ध कराया।[6]

इसी क्रम में 13वीं लोकसभा हेतु हुए निर्वाचन में वर्ष 1998 में भाजपा ने अपने परम्परागत मुद्दों पर चुनाव लड़ा। भाजपा ने 339 सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े किए तथा 182 सीटों पर विजय प्राप्त की। भाजपा के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबंधन के तहत एक मिली जुली सरकार बनी। लम्बे समय से चली आ रही राजनीतिक अस्थिरताओं के बीच राजग सरकार ने भाजपा कार्यकाल पूर्ण कर संघीय राजनीति में स्थिरता प्रदान की। भाजपा की आन्तरिक खींचतान भी कुछ ऐसे कारण जिससे आगामी 2002 के 14वीं लोकसभा चुनावों में भाजपा सत्ता से बाहर हो गया। गत चुनावों की 182 सीटों के मुकाबले भाजपा 130 सीटें ही प्राप्त कर पाई। 14वीं एवं 15वीं लोकसभा में भाजपा विपक्ष की ही भूमिका निभानी रही।

राजनीतिक विश्लेषणों एवं समस्त अनुमानों के विपरीत 2014 के 16वीं लोकसभा चुनावों में भाजपा ने स्पष्ट एवं पूर्ण बहुमत प्राप्त कर राजनीतिक गतिशीलता एवं भारत में लोकतान्त्रिक परिपक्वता को सुदृढ़ता प्रदान की।

राजस्थान में भारतीय जनता दल

राजस्थान में मुख्यतः कांग्रेंस एवं भाजपा ही प्रभुत्वशाली राजनीतिक दल हैं। पूर्व में राज्य में काग्रेंस दल का वर्चस्व रहा है। कांग्रेंस के श्री मोहन लाल सुखाड़िया 17 वर्ष तक राज्य के मुख्यमंत्री रहे। इसी दौरान भाजपा भैरोसिंह शेखावत के नेतृत्व में एक मुख्य विपक्षी दल था। 1989 में भाजपा जनता दल के गठबंधन ने लोकसभा के लिए राज्य की सभी 25 सीटों पर विजय प्राप्त की तथा विधानसभा में 200 मे से 140 सीटें जीती। भैरोसिंह शेखावत के नेतृत्व में भाजपा ने राज्य में सरकार बनाई। अयोध्या में बाबरी मस्जिद विध्वंस के पश्चात् प्रधानमंत्री नरसिंह राव द्वारा शेखावत सरकार को निलंबित कर दिया तथा राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया। तत्पश्चात् 1993 में भैरोसिंह शेखावत ने बाहरी दलों के समर्थन से मिलीजुली सरकार बनाई।[7]

शेखावत सरकार ने अपना कार्यकाल पूर्ण किया। इस दौरान राज्य का विकास हुआ तथा राजस्थान को वैष्विक पहचान प्राप्त हुई। लेकिन मँहगाई, भाजपा में वंषवाद, खीचातान आदि कारणों की वजह से 1998 में भाजपा सत्ता से बाहर हो गई तथा अशोक गहलोत के नेतृत्व में कांग्रेस ने सरकार गठित की। 2003 में वसुंधरा राजे के नेतृत्व में भाजपा ने पुनः वापसी कर राज्य में सरकार बनाई। लेकिन 2008 में भाजपा की आन्तरिक खींचातान व गुर्जर मीणा आरक्षण विवाद के चलते पार्टी 2008 के चुनावों में हार गई। लेकिन 2013 के विधानसभा चुनावों में मोदी फेक्टर, विकास, सुशासन के दावों के आधार पर अप्रत्याशित विजय हासिल कर पूर्ण व स्पष्ट बहुमत की सरकार भाजपा ने बनाई है।

16वीं लोकसभा चुनावों में राजस्थान

5000 साल पुराना ऐतिहासिक राज्य राजस्थान जिसको 'राजाओं की भूमि' कहा जाता है, वर्तमान में इसका क्षैत्रफल 342,239 वर्गकिलोमीटर में फैला भारत का सबसे बडा राज्य है एवं इसकी राजधानी जयपुर है। राजस्थान के 33 जिलों में से 25 संसदीय चुनाव निर्वाचन क्षेत्र है, जिसमें से 4 अनुसूचित जाति एवं 3 अनुसूचित जनजाति आरक्षित है। तत्कालीन अप्रैल 2014 में 16वीं लोकसभा में राजस्थान ने अद्भूत विजय प्राप्त की। इससे पूर्व वर्ष 2013 में कुछ राज्यों में हुए विधान सभा चुनावों में इसके पूर्व संकेत प्राप्त हो चुके थे जब भाजपा ने प्रत्येक राज्य निर्वाचनों में अपना परचम लहराया। विशेषतया राजस्थान में सम्पन्न हुए विधान सभा चुनावों में भाजपा ने न केवल पूर्ण बहुमत प्राप्त किया अपितु रिकार्डतोड़ 162 सीटों (200 में से) पर वसुन्धरा राजे सिंधिया ने विजय प्राप्त की जो कुल सीटो का लगभग 80 फीसदी था। विगत 2008 के विधानसभा चुनावों में भाजपा को केवल 81 सीटें प्राप्त हो सकी थी, जिसके मुकाबले भाजपा को इन चुनावों में दोगुनी सीटें प्राप्त हुई। मोदी फैक्टर रहा हो या महँगाई, भ्रष्टाचार पर जनता का गुस्सा निसंदेह इस बार मतदाता ने अपनी मन के द्वारा भारतीय लोकतंत्र की जीवन्तता प्रदान कर उसकी गतिशीलता को निर्विवाद बनाए रखा। यह भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता एवं लोगो की भागीदारी का एक शुभ संकेत भी था। पूर्ववर्ती सरकार की मुफ्त दवा, मुफ्त जाँच, पेंशन जैसे फैसले की कांग्रेंस भी वापसी नहीं कर पाए। भाजपा की इस विशाल जीत में कांग्रेंस सरकार के भ्रष्टाचार, महँगाई, यौन मामलो में कांग्रेंसी नेताओं की लिप्तता आदि के भी महत्वपूर्ण

भूमिका निभाई। राज्य के इतिहास में यह तीसरा अवसर रहा जब किसी एक दल को 200 में से 150 से अधिक सीटे प्राप्त हुई हो। सर्वप्रथम वर्ष 1977 में जनता पार्टी को 150 सीटें प्राप्त हुई थी। इसके पश्चात् वर्ष 1998 में काग्रेंस को 153 सीटों पर जीत मिली थी।[8]

राजस्थान विधानसभा चुनाव 2013 में केवल राज्य में ही भाजपा के उदय का संकेत नही दे रहे थे अपितु आगामी लोकसभा चुनाव 2014 के लिए पृष्ठभूमि तैयार कर रहे थे। इन लोकसभा चुनावों में राजस्थान से भाजपा ने अपने प्रतिद्वंदी काग्रेंस दल को हराकर सम्पूर्ण 25 सीटों पर एतिहासिक जीत हासिल की। 6वी लोकसभा के चुनाव कुल 9 चरण में हुए, जिसमें से पांचवें एवं छठें चरण में राजस्थान क्षेत्र में चुनाव सम्पन्न करवाये गयें। पाचवें चरण के चुनाव 17 अप्रैल 2014 को 20 सीटों के लिए हुए। इस चरण में कुल मतदान 63.25ः हुआ, इसमें पुरूष मतदाता 65.04ःएवं महिला मतदाता 62.33ः रहें। छठें चरण के चुनाव 24 अप्रैल 2014 को शेष 5 सीटों के लिए हुए। इसमें कुल मतदान 59.2 : रहा, इसमें पुरूष मतदाता 62.88ः एवं महिला मतदाता 56.37ः रहा। इस चुनाव में राजस्थान ने सम्पूर्ण 25 सीटें प्राप्त की। इन 25 सीटों में से 1 सीट पर महिला उम्मीदवार है। इस ऐतिहासिक जीत के लिए वसुन्धरा राजे सहित प्रमुख नेताओं ने रोड शो एवं रैलियों आदि का आयोजन कर यह कठिन चुनाव अभियान चलाया। एक अन्य दृष्टि से इन चुनावों ने भारतीय मतदान व्यवहार की तस्वीर ही बदल कर रख दी। मतादाता ने वंशवाद, जाति, धर्म की राजनीति को नकार दिया तथा विकास, सुशासन जैसे मुद्दों से प्रेरित होकर मतदान किया। निश्चित रूप से भारतीय राजनीति का चेहरा बदल गया था।[9]

नरेन्द्र मोदी का स्पष्ट व्यक्तिगत, बेलाग बोली, गुजरात विकास का विजन तथा युवाओं में उनकी ख्याति भाजपा की विजय में बदल गया। युवा मतदाताओं को मोदी में देश का भविष्य नजर आया जो मतदान के रूप में मुखरित हुआ। भाजपा ने केन्द्र की भांति राज्य में भी वसुन्धरा राजे ''आओ साथ चले'' का नारा दिया। शहरों के साथ साथ गांवो में भी वसुन्धरा राजे की ''सुराज संकल्प यात्रा'' ने जनादेश को प्रभावित किया। वसुन्धरा राजे की कार्यप्रणाली एवं विकास के वादों के चलते भाजपा ने टिकट वितरण में उन्हें विशेषाधिकार दिया। जिसका नतीजा भाजपा को प्रदेश में विशाल जनमत के रूप में सामने आया।

भाजपा इन चुनावों में अपने परम्परांगत मुद्दों यथा, हिन्दुत्व की पीछे छोडकर विकास, सुशासन, भारत निर्माण जैसे मुद्दों पर चुनाव लड़ रही थी। युवा वर्ग को ध्यान में रखकर चुनावी रणनीतियाँ बनाई गई तथा सोशल मीडिया की प्रभावकारी भूमिका का इस्तेमाल किया गया। यह सभी तथ्य भाजपा की इस अविश्वसनीय विजय के कारण बनें।

वर्ष 2014 में 16वीं लोकसभा चुनाव का सन्दर्भ

राजस्थान विधानसभा चुनाव में प्राप्त संकेत को एवं आभास का परिणाम 2014 में सम्पन्न 16वीं लोकसभा चुनावों में प्राप्त हुआ जब भाजपा को लोकसभा में स्पष्ट बहुमत प्राप्त हुआ। राज्य स्तर पर ही नहीं अपितु यह केन्द्र में भी भाजपा के बढ़ते वर्चस्व का सूचक था। 2014 का जनादेश भारतीय लोकतंत्र में एक नया वंसत लेकर आया। भारत की जनता ने पंथ क्षेत्र मजहब की संकीर्णताओं को तोड़कर राष्ट्र सर्वोपरिता को राष्ट्रीय विकास और सुशासन को मूलमंत्र मानकर मतदान किया। 30 वर्ष बाद लोकसभा में एक दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त हुआ। जनता ने भाजपा का दर्षन सांस्कृतिक राष्ट्रवादी विचार और राष्ट्र निर्माण का विचार खुलेमन से स्वीकार किया है। जनता यूपीए सरकार उसकी नीतियों, भ्रष्टाचार, अनैतिकता से आहत हो चुकी थी तथा बदलाव चाह रही थी। जनता ने भाजपा एवं उसके सहयोगी दलों पर पूर्ण विश्वास प्रकट किया है।

भाजपा अब जनविश्वास का केन्द्र बन गई है। भारत की जनता ने नरेन्द्र मोदी एवं उसके सुशासन के नारो पर विश्वास प्रकट किया। एक व्यक्ति के रूप में नरेन्द्र मोदी और राजस्थान से वसुंधरा राजे सिंधिया प्रभुत्व का असर भाजपा की जीत पर सर्वाधिक दिखा। मोदी ने सेकुलर बनाम गैर सेकुलर की बहस को पीछे छोड़ते हुए राष्ट्र सर्वोपरिता विकास और सुशासन की स्वाभाविक जनअभिलाषा को बोली दी।

राष्ट्रीय राजनीति की दिषा बदल गई है। लोकसभा का बहुमत भाजपा के साथ है तथा राज्य में विधानसभा में भी भाजपा बहुमत में है। महाराष्ट्र में भाजपा बिना शिवसेना के गठबंधन के अपने दम पर 122 सीटें लाना बहुत बड़ी बात है। हरियाणा में भी 90 सीटों में से 47 सीटों पर भाजपा ने अपने दम पर पहली बार सरकार बनाई। इन विधानसभा चुनाव में जीत से उत्साहित भाजपा झारखंड और जम्मूकश्मीर में भी सरकार बनाने की राह देख रही है।[10]

निष्कर्ष

इन उपलब्धताओं के साथ जनता की अपेक्षाएं भी बड़ी है और बढ़ी भी हैं। यह महाविजय भाजपा के लिए चुनौति है। इस विशल एवं प्रचण्ड विश्वास पर उसे अगले पांच वर्ष में खरा उतरना होगा। विकास की नवीन योजनाएं चलानी होगी। कानून के प्रति जनविश्वास बहाल करना होगा। भाजपा के समक्ष राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय चुनौतियाँ भी है। भाजपा को पूर्ववर्ती सप्रंग सरकार की जनविरोधी नीतियों को सुधारना है सरकारी तन्त्र को कार्य संस्कृति देनी है। भाजपा जनविश्वास एवं जनसमर्थन की ऊर्जा से परिपूर्ण है। भाजपा में बढ़ता विश्वास एवं दल की बढ़ती लोकप्रियता से राज्य ही नही देश में भी पार्टी का कद एवं छवि बढ़ी है। विश्वास किया जाना चाहिए कि देश में सुशासन की नवीन धारा का प्रवाह होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक न्याय द्वारा देश चहुँमुखी विकास की ओर अग्रसर होगा।

अंत टिप्पणी

1. *हसन जोया,पार्टीज एंड पार्टी पॉलिटिक्स इन इंडिया, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004, पृ.सं 498*
2. *सरदेसाई राजदीप, 2014 चुनाव जिसने भारत को बदल दिया, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं 356*
3. *बक्शी, एस.आर.श्यामा प्रसाद मुखर्जीः फाउन्डर ऑफ़ जनसंघ, अनमोल प्रकाशन, न्यू देहली, 1992, पृ.सं 25*

4. *ग्राहम बी.डी, हिन्दू नेशनलिस्म एंड इंडियन पॉलिटिक्सः द ओरिजिंस एंड डेवलपमेंट ऑफ़ द भारतीय जनसंघ, केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस 1990, पृ.सं 63*
5. *अग्रवाल जे . सी एंड चौधरी एन . के, इलेक्शन इन इंडिया , शिप्रा पब्लिशर्स, न्यू देहली, पृ.सं 56*
6. *भाम्भरी सी.पी, इंडियन पॉलिटिक्स सिंस इंडिपेंडेंस, शिप्रा पब्लिशर्स, न्यू देहली, पृ.सं 113*
7. *जोहरी जे.सी, इंडियन गवर्नमेंट एंड पॉलिटिक्स, विशाल पब्लिकेशन, जालंधर, पृ.सं 16*
8. *कोठारी रजनी, पार्टी सिस्टम एंड इलेक्शन स्टडीज, एशिया पब्लिकेशन, बॉम्बे, 1967, पृ.सं 34*
9. *वही, सरदेसाई राजदीप, पृ.सं 348*
10. *वही, सरदेसाई राजदीप, पृ.सं 359*